Impact Factor (SJIF): 6.092 E-ISSN: 2583-1615

International Journal of Research in Academic World

Received: 25/November/2024 IJRAW: 2024; 3(12):172-176 Accepted: 29/December/2024

मुग़ल कला में अभारतीय कथाओं का चित्रण

*[1]हरफूल शर्मा

*[1]सहायक आचार्य, फाइन आर्ट्स एन्ड पेंटिंग (विद्या संबल योजना), चित्रकला विभाग, राजकीय कन्या महाविद्यालय, पाली, राजस्थान, भारत।

सारांश

मुगलकालीन चित्रकला में अभारतीय कथा चित्रण कला और संस्कृति के आदान-प्रदान का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। मुगल चित्रकला न केवल भारतीय और फारसी परंपराओं का संगम थी बल्कि इसमें विदेशी तत्वों और कथाओं का भी समावेश हुआ। इसमें विदेशी साहित्य, धर्म, और ऐतिहासिक परंपराओं को भारतीय संवेदनाओं के साथ मिलाकर प्रस्तुत किया गया। यह कला भारत की सांस्कृतिक विविधता और समावेशी दृष्टिकोण का प्रतीक है। इन चित्रों ने न केवल मुगल साम्राज्य के सांस्कृतिक विस्तार को दिखाया बल्कि कला को एक वैश्विक आयाम भी प्रदान किया। अभारतीय कथा चित्रण के माध्यम से मुगल चित्रकला ने न केवल विदेशी संस्कृति को अपनाया बल्कि उसे भारतीय संदर्भ में नया रूप दिया।

मुख्य शब्द: परिप्रेक्ष्य, यथार्थवाद, अभारतीय, फारसी, मुग़ल, इस्लामी, यूरोपीय, बाइबिल।

प्रस्तावना

भारत के सांस्कृतिक और कलात्मक इतिहास में मुगल कला एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। भारतीय कला में मुगल चित्र शैली अनेक कारणों से एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है।प्रथम तो इस कला के माध्यम देश की धार्मिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक एकसूत्रता की पृष्ठभूमि मिली। दूसरा इस कला ने अपने विकास एवं निर्माण में बाहरी कला शैलियों के साथ समन्वय किया मुगल चित्र शैली ने नये प्रगतिशील तत्वों का समावेश किया और अंकन, अलंकरण और रंगाभराव की दृष्टि से भी उसे नया आलोक प्रदान किया। 16वीं से 18वीं शताब्दी के बीच मुगल साम्राज्य के शासकों ने न केवल प्रशासन और राजनीति में उत्कृष्टता दिखाई बल्कि कला, वास्तुकला, और साहित्य के क्षेत्र में भी गहरी छाप छोड़ी। मुगल चित्रकला इस काल की प्रमुख उपलब्धियों में से एक है। इस कला में भारतीय और फारसी परंपराओं का अनूठा संगम देखने को मिलता है।

साहित्यावलोकन

डॉ. रीता प्रताप द्वारा लिखित "भारतीय चित्रकला एवं मूर्ति कला का इतिहास" पुस्तक का अध्ययन किया जो भारतीय चित्रकला मूर्तिकला एवं मंदिर कला पर विवरण प्रस्तुत करती है। डॉ. आर. ए. अग्रवाल द्वारा लिखी गई "कला विलास-भारतीय चित्रकला का विवेचन" पुस्तक का अध्ययन किया, इस पुस्तक में भारतीय चित्रकला एवं विभिन्न चित्र शैलियों का विवरण प्रस्तुत किया गया है। डॉ. अविनाश बहादुर वर्मा द्वारा रचित "भारतीय चित्रकला का इतिहास" पुस्तक का अध्ययन किया जो भारतीय कला इतिहास में शैलियों का स्पष्टीकरण प्रस्तुत करती है। डॉ. लोकेश चंद्र शर्मा द्वारा लिखित "भारत की चित्रकला का संक्षिप्त इतिहास" पुस्तक का अध्ययन किया जिसमें भारतीय चित्र शैलियों का विवरण प्रस्तुत किया गया है।

मुगल काल का उद्भव और विकास

i). **प्रारंभिक दौर:** मुगल चित्रकला की नींव बाबर और हुमायूं काल में पड़ी लेकिन इसका वास्तविक विकास अकबर के शासनकाल में हुआ। अकबर ने फारसी चित्रकारों और भारतीय कलाकारों को साथ लाकर एक नई शैली विकसित की, इस शैली में भारतीय परंपराओं को अपनाते हुए फारसी और इस्लामी कलात्मक तत्वों का मिश्रण किया॥

ii). **अकबर काल:** अकबर ने भारतीय और फारसी चित्रकारों को अपने दरबार में आमंत्रित किया जिनकी कृतियों में दोनों संस्कृतियों का अद्भुत मिश्रण देखा गया । उसके शासनकाल में हम्जानामा, अकबरनामा और रज्मनामा जैसे ग्रन्थों का चित्रण हुआ।

iii). **जहांगीर काल:** जहांगीर के शासनकाल में मुगल चित्रकला का सुनहरा दौर आया। इस काल में चित्रांकन में यथार्थवाद और प्रकृति के प्रति गहन रुचि देखी गई। विदेशी तत्वों जैसे यूरोपीय परिप्रेक्ष्य और धार्मिक कथाओं का समावेश भी हुआ।

अभारतीय कथा चित्रण का परिचय

मुगल चित्रकला में अभारतीय कथाओं का चित्रण विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इसमें मुख्यतः फारसी और मध्य एशियाई साहित्यिक परंपराएं, इस्लामी धार्मिक कथाएं और यूरोपीय बाइबिल की कहानियाँ शामिल है। इन चित्रों में कला की उत्कृष्टता और कहानियों

*Corresponding Author: हरफूल शर्मा

की गहराई को जीवंत रंगों और सूक्ष्म विवरणों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है।

i). **फारसी साहित्य का प्रभाव:** मुगल चित्रकला में फारसी कथाओं का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। फारसी साहित्य मुगल दरबार की सास्कृतिक धारा का महत्वपूर्ण भाग था।विशेष रूप से दस्ताने-ए-अमीर हम्जा/हम्जानामा, शाहनामा (फिरदौसी द्वारा) खुसरो शिरीन और लैला मजनू कथाएं चित्रों में प्रमुखता से उभरी, इन कथाओं के माध्यम से फारसी संस्कृति और शिष्टाचार का प्रचार हुआ।

दास्तान-ए-अमीर हम्जा/हम्जानामा (1558-1573 ई.) अकबर कालीन समस्त ग्रन्थों में हम्जानामा चित्रावली महत्वपूर्ण है । इस ग्रंथ में मोहम्मद साहब के समकालीन अमीर हम्जा की कहानी है जो पहले तो हजरत के विरोधी थे, बाद में उनके अनुयायी हो गये एवं इन्होंने इस्लाम के प्रचारार्थ अनेक वीरतापूर्ण एवं साहसपूर्ण कार्य किये। इन चित्रों का निर्माण (67.50×50 सेंटीमीटर) कपड़े पर आरोपित कागज पर किया गया जो एक सूती कपड़े पर कागज़ का अस्तर लगाकर बनाए जाते थे और सभी चित्र अहस्ताक्षरित है। कहा जाता है कि यह वह ग्रंथ है जिसमें कुछ प्रेम कथा विषयक चित्र हुमायूं के समय में बनवाए गए थे। किंतु 'श्री राय कृष्ण दास जी' का मानना है कि इसे पूर्णतया अकबर ने ही चित्रित कराया था। 'मआसिरूल उम्रा' के अनुसार हुमायूं के समय में ही इस विषद कथा के चित्र बनाए जाने लगे थे और ये अकबर के समय तक बनते रहे। अकबर ने इस कथा को 12 खण्डों में विभाजित कराया था और इनमें से प्रत्येक खंड में एक सौ जूज थे। इस प्रकार इस प्रतिलिपि में 2400 चित्र बनाये गये। विहजाद के समान तूलिका वाले चित्रकार इस पुस्तक को तैयार करने के लिए नियुक्त किये गये और बाद में ख्वाजा अब्दुस्समद 'शीराजी' की देखरेख में यह कार्य चलता रहा। इस समय यह पुस्तक शाही पुस्तकालय में है। इसमें 1400 चित्र थे जो 17 जिल्दो में थे, इनमें अधिकांश चित्र उपलब्ध नहीं है।

अमीर हम्जा के चित्रों में फारसी प्रभाव अधिक है। आज इसके 150 चित्र उपलब्ध है जिसे 'गुलूक' ने संग्रहीत कर सन् 1925 ई. में वियना से छपवाया था। आज 61 चित्र 'वियना' में, 25 साउथ केन्सिगटन संग्रहालय लंदन तथा 15 अमेरिका के विभिन्न संग्रहालयों में है। भारत में 6 चित्र है जिनमें 2 चित्र भारत कला भवन, वाराणसी, 2 मुंबई, 1 हैदराबाद व 1 बड़ौदा संग्रहालय में है।

चित्र 1: जासूस ज़नबुर माहियया को तवारिक शहर में लाता है अकबर हमज़ानामा से

ii). **शाहनामा (1605-15 ई.) ईरान के राजाओं का इतिहास:** फिरदौसी का यह है महाकाव्य ईरानी राजाओं और योद्धाओं की कहानियां प्रस्तुत करता है। मुगल कलाकारों ने इस ग्रंथ के दृश्यों को बड़े कौशल के साथ चित्रित किया। उदाहरण के लिए राजाओं के युद्ध और दरबार के चित्रों में रंगों और व्यक्तित्व की गहराई अद्वितीय थी।

फ़िरदौसी द्वारा रचित "शाहनामा" (शाह का नाम) फारसी भाषा का एक महाकाव्य है जिसे 10वीं शताब्दी में लिखा गया। यह ईरानी इतिहास, मिथकों और नायकों के अद्भुत चित्रण के लिए प्रसिद्ध है। इस महाकाव्य में मुख्यतः फारस की सभ्यता, सांस्कृतिक धरोहर और ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन मिलता है। शाहनामा केवल एक महाकाव्य नहीं बल्कि यह ईरानी सभ्यता का एक दर्पण है। इसमें इतिहास, संस्कृति, और नैतिक आदर्शों को गहराई से उकेरा गया है। इसके विभिन्न पहलुओं को और विस्तार से समझा जा सकता है: शाहनामा में फारस के महान शासकों, उनके राजवंशों और प्राचीन मिथकों का समावेश है। इसमें फारसी साम्राज्य के उदय और पतन की गाथा, महान योद्धाओं की कहानियाँ और ईरानी संस्कृति का वर्णन मिलता है।काव्य में रुसतम, सोहराब, ज़ाल और सियावुश जैसे नायकों का अत्यंत जीवंत चित्रण है। ये पात्र वीरता, नैतिकता और संघर्ष के प्रतीक हैं।शाहनामा में प्रकृति के तत्वों जैसे पहाड़ों, नदियों और चमत्कारी घटनाओं का भी गहन चित्रण है। इनसे यह ग्रंथ न केवल ऐतिहासिक बल्कि आध्यात्मिक दृष्टि से भी समृद्ध बनता है।

चित्र 2: शाहनामा Tahmasbi, समकालीन कला संग्रहालय, तेहरान

iii). **तूतीनामा (1560-68 ई.):** तोते का प्रेमालाप इस ग्रन्थ का विषय है। फ़ारसी में 52 कहानियों की 14वीं सदी की एक श्रृंखला है। यह कृति काफी हद तक कई भव्य सचित्र पांडुलिपियों के कारण प्रसिद्ध है। इसमे 103 चित्र है। सन 1330 ई. के आसपास तूतीनामा की कथा ईरान में काफी प्रचलित थी और उसी का मुगलिया रूप तूतीनामा है । इसके चित्र हम्जानामा वाले चित्रों के समान ही है। वस्त्र {चक्रदारजामा} प्रकृति एवं वास्तु का अंकन हम्जानामा से काफी साम्य रखता है। यहां केवल पक्षियों के अंकन में पूर्ण उन्मुक्तता है व भारतीय परंपरा के नजदीक है। कुछ चित्रों पर वसावन. दसवंत, इकबाल आदि कलाकारों के नाम अंकित है। वर्तमान में यह चित्रित "क्लोवलैंड म्यूजियम ऑफ आर्ट" क्लोवलैंड और "चेस्टरबेट्टी लाइब्रेरी', डबलिन" में संग्रहित है और इसी के कुछ पृष्ट "लखनऊ संग्रहालय" में भी सुरक्षित है।

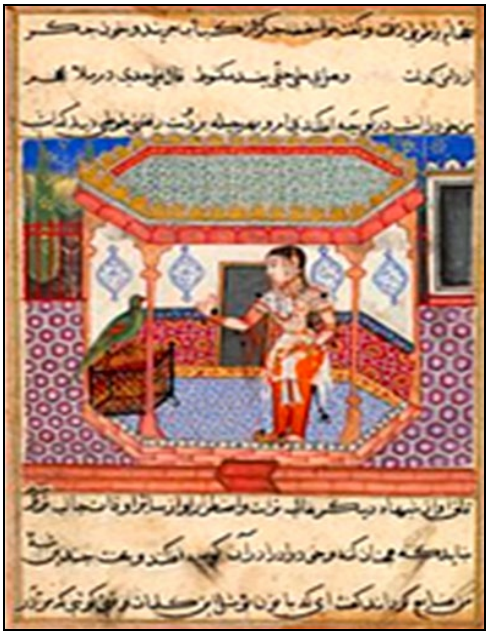

चित्र 3: तोता खोजास्ता को संबोधित कर रहा है

iv). **"लैला-मजनू" की प्रेम कहानी:** मुगल काल के दौरान "लैला-मजनू" की प्रेम कहानी को न केवल काव्य और साहित्य में बल्कि चित्रकला में भी व्यापक रूप से चित्रित किया गया। इस काल में फारसी, राजस्थानी और भारतीय लोककथाओं से प्रेरित होकर कलाकारों ने प्रेम कहानियों को अपनी कला में उतारा। "लैला-मजनू" इन कथाओं में से एक थी जिसे गहरे भावनात्मक और आध्यात्मिक संदर्भों में चित्रित किया गया।

चित्र 4: लैला और मजनू, मुगल राजवंश, 17वीं शताब्दी

1. कथा का महत्व

लैला और मजनू की कहानी इश्क (प्रेम) का प्रतीक मानी जाती है। इस प्रेम कहानी में विरह, मिलन और आध्यात्मिक प्रेम का वर्णन है। इसे प्रेम की सबसे पवित्र अवस्था कहा जाता है। मुगल कलाकारों ने इन भावनाओं को चित्रकला में विशेष प्राथमिकता दी।

2. फारसी प्रभाव

लैला-मजनू की कहानी फारसी साहित्य से प्रेरित है। मुगल चित्रकला में फारसी शैली का बड़ा योगदान रहा। चित्रों में फारसी लिपि के साथ कविता के शेर भी शामिल होते थे जो दृश्य के अर्थ को ओर अधिक गहराई देते थे।

3. प्रमुख दृश्य

लैला-मजनू के चित्रण में अक्सर कुछ विशिष्ट दृश्यों को दर्शाया गया है:

- **मजनू का तपस्या करना:** मजनू को अक्सर जंगल में अकेले, ध्यानमग्न या किसी चट्टान पर बैठा दिखाया गया है।
- **लैला की खोज:** लैला को महल में अपने प्रिय मजनू के लिए विलाप करते हुए दर्शाया गया है।
- **गुप्त मुलाकातें:** लैला और मजनू को गुप्त रूप से एक बगीचे या प्राकृतिक वातावरण में मिलते हुए चित्रित किया गया है।
- **प्रेम का प्रतीक पशु:** हिरण, पक्षी (विशेषकर बुलबुल और तोता) और फूल (गुलाब) इन चित्रों में प्रेम के प्रतीक के रूप में प्रमुखता से उभरते हैं।

4. रंगों का उपयोग

- मुगल चित्रकला में गहरे और समृद्ध रंगों का उपयोग किया गया, जैसे लाल, हरा, नीला और सोने का काम।
- लैला-मजनू की प्रेम भावना को व्यक्त करने के लिए हल्के और शांत रंगों का भी उपयोग किया गया।

5. वेशभूषा और आभूषण

लैला को पारंपरिक मुगल महिलाओं की पोशाक (घाघरा, चोली, और दुपट्टा) में चित्रित किया गया है जबकि मजनू को सादगी के साथ दिखाया गया है, जो उसके तपस्वी जीवन को दर्शाता है।

6. प्राकृतिक सौंदर्य

- बगीचे, नदी, पहाड़ और चांदनी रात जैसे प्राकृतिक तत्वों का चित्रण प्रेम और वियोग के भाव को गहराई देता है।
- पेड़-पौधों की बारीकियां और उनके सजीव चित्रण मुगल चित्रकला की उत्कृष्टता को दर्शाते हैं।

v). इस्लामी धार्मिक कथाएं

मुगल चित्रकला में इस्लामी धार्मिक कथाओं का भी चित्रण हुआ। यह चित्रण न केवल धार्मिक श्रद्धा को व्यक्त करता था बल्कि इसे राजनैतिक और सांस्कृतिक पहचान का हिस्सा भी बनाया गया

- **कुरआन की कहानियाँ:** मुगल चित्रकारों ने नबी और पैगंबरों की कहानियों को सूक्ष्म और विस्तृत चित्रण के माध्यम से प्रस्तुत किया
- **मीराज:** इस्लामिक परंपरा में पैगंबर मोहम्मद का स्वर्गारोहन एक महत्वपूर्ण घटना है।इसका चित्रण मुगल कला में बड़े भव्य और रहस्यमय रूप में किया गया है।

vi). यूरोपीय प्रभाव और बाइबिल की कहानियाँ-

ईसा मसीह का जन्म और जीवन: बाइबिल की कहानी जैसे क्राइस्ट का जन्म, अंतिम भोज और क्रोस पर चढ़ाए जाने का चित्रण मुगल कलाकारों ने अपनी विशिष्ट शैली में किया। इन चित्रों में भारतीय और फारसी रंग योजना के साथ यूरोपीय परिप्रेक्ष्य का मिश्रण देखा जा सकता है

1. ऐतिहासिक संदर्भ

मुग़ल साम्राज्य (1526-1857) एक ऐसा दौर था जब विभिन्न संस्कृतियों, धर्मों और कलात्मक परंपराओं का मिश्रण हुआ। अकबर के शासनकाल में यूरोपीय व्यापारियों और मिशनरियों का आगमन हुआ जिनके माध्यम से बाइबिल की कहानियाँ और यूरोपीय कला शैलियाँ मुगल दरबार में पहुंची। यह प्रभाव विशेष रूप से जहांगीर और शाहजहां के शासनकाल में दिखता है।

- अकबर ने विभिन्न धर्मों की समझ विकसित करने के लिए "दीन-ए-इलाही" जैसे प्रयास किए और उनके दरबार में जेसुइट मिशनरियों को आमंत्रित किया गया।

- ये मिशनरी धार्मिक ग्रंथ, चित्र और कलाकृतियाँ लेकर आए जिनका प्रभाव मुग़ल कला पर पड़ा।

2. प्रमुख चित्रण

(क) ईसा मसीह का जन्म (Nativity)

यह चित्रण बाइबिल के अनुसार ईसा मसीह के जन्म की कहानी को दर्शाता है।

- **चरनी का दृश्य:** ईसा मसीह को एक साधारण चरनी में लेटे हुए दिखाया गया है जहां माता मरियम और यूसुफ प्रार्थना कर रहे हैं।
- **देवदूत और चरवाहे:** मुगल शैली में बनाए गए चित्रों में देवदूतों और स्थानीय चरवाहों को भी शामिल किया गया।
- **सजावट:** यह दृश्य बाइबिल के विवरण से प्रेरित होते हुए भी मुगल कला की विशेषताओं जैसे कि फूलों के मोटिफ, बारीक कढ़ाई वाले वस्त्र और सोने के रंगों से सजे कपड़ों में दिखाई देता है।

(ख) क्रूस पर चढ़ना (Crucifixion)

ईसा मसीह का बलिदान उनके जीवन का सबसे प्रमुख धार्मिक विषय है।

- मुगल चित्रकारों ने इस दृश्य को भावनात्मक और करुणामय ढंग से चित्रित किया।
- **पृष्ठभूमि:** यूरोपीय प्रभाव को ध्यान में रखते हुए परिदृश्य में गहरे रंग और नाटकीय प्रकाश-छाया का प्रयोग किया गया।

(ग) पुनरुत्थान (Resurrection)

यह विषय ईसा मसीह के मृत्यु के बाद पुनरुत्थान की कहानी को दर्शाता है।

- **देवदूतों और प्रकाश का प्रयोग:** मुगल चित्रकारों ने ईसा मसीह के चारों ओर प्रकाश की किरणों और देवदूतों के साथ इस घटना को दिखाया।

3. कलात्मक शैली का अनूठा मिश्रण

यूरोपीय प्रभाव

- मुगल कलाकारों ने यूरोपीय चित्रण तकनीकों को अपनाया जैसे कि परिप्रेक्ष्य (Perspective), गहराई और त्रिआयामिता।
- चित्रों में चेहरे की भाव-भंगिमा को गहराई से दिखाया गया जो कि मुगल चित्रकला की पारंपरिक शैली से भिन्न था।

मुगल शैली

- **बारीक कारीगरी:** हर चित्र में बारीक डिटेल्स विशेषकर वस्त्र और पृष्ठभूमि की सजावट में।
- **रंगों का प्रयोग:** पारंपरिक मुगल शैली में चमकीले और समृद्ध रंग जैसे लाल, नीला और सोना।
- **भारतीय रूपांकन:** कई चित्रों में ईसाई कथाओं को भारतीय परिवेश में ढाला गया जैसे कपड़े, आभूषण और वास्तुकला।

4. सांस्कृतिक और धार्मिक महत्व

(क) सहिष्णुता का प्रतीक

मुगल कला में ईसा मसीह और बाइबिल से जुड़े विषयों का चित्रण यह दर्शाता है कि मुगल मुग़ल शासकों ने विभिन्न धर्मों को समझने और उनका सम्मान करने की कोशिश की।

(ख) संवाद का माध्यम

- ईसाई मिशनरियों और मुगल मुग़ल दरबार के बीच सांस्कृतिक संवाद स्थापित करने में इन चित्रों ने एक सेतु का काम किया।
- कला के माध्यम से धार्मिक विविधता और सहिष्णुता को बढ़ावा दिया गया।

(ग) वैश्विक दृष्टिकोण

मुग़ल कला ने स्थानीय और वैश्विक दोनों तत्वों को जोड़ने का प्रयास किया।

vii). समकालीन महत्व

आज मुगल चित्रकला में ईसाई विषयों का अध्ययन न केवल ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है बल्कि यह धार्मिक सहिष्णुता और सांस्कृतिक एकता के मूल्य को भी दर्शाता है।

इस प्रकार मुगल कला में ईसा मसीह के जन्म और उनके जीवन से संबंधित चित्रण भारतीय इतिहास और कला में एक अनूठा अध्याय है। मुगल चित्रकला भारतीय, फारसी और इस्लामी कला परंपराओं का एक अनूठा मिश्रण है और यह 16वीं से 18वीं शताब्दी के दौरान भारतीय उपमहाद्वीप में विकसित हुई। मुगल कलाकारों ने अक्सर ईसाई धर्म के प्रतीकात्मक चित्रों को अपनाया जो मुख्य रूप से यूरोपीय कलाकारों और ईसाई मिशनरियों के संपर्क में आने के कारण संभव हुआ। इस संदर्भ में "मैडोना और चाइल्ड" का चित्रण जिसमें वर्जिन मैरी और बाल यीशु को दर्शाया गया है, मुगल कला में भी देखा जा सकता है।

मैडोना और चाइल्ड

वर्जिन मैरी और बाल यीशु के चित्र मुगल चित्रकला में विदेशी धार्मिक कथाओं के प्रति रुचि को दर्शाते हैं।

i). **पुर्तगाली और यूरोपीय प्रभाव:** मुगल सम्राट अकबर के समय में पुर्तगाली मिशनरियों ने भारतीय उपमहाद्वीप में प्रवेश किया और इसके साथ ही वे यूरोपीय धार्मिक चित्रों को भी लाए। अकबर ने धार्मिक सहिष्णुता को बढ़ावा देने के लिए हिंदू, इस्लामी और ईसाई धर्मों के बीच संवाद को प्रोत्साहित किया। इस समय में कई पुर्तगाली मिशनरी चित्रकला का आदान-प्रदान हुआ और मुगलों ने इसे अपनी कला में समाहित किया। आध्यात्मिक और धार्मिक चित्रकला जैसे कि "मैडोना और चाइल्ड", यूरोपीय चित्रकला में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती थी और यह प्रेरणा मुगल चित्रकारों के लिए एक नया क्षेत्र था। विशेष रूप से अकबर ने पश्चिमी कला को अपनाने की दिशा में कई प्रयास किए और यह कला शैली मुगलों के लिए एक नई कल्पना को जन्म देने वाली थी।

ii). **चित्रकला का भारतीय रूपांतरण:** मुगल चित्रकला में "मैडोना और चाइल्ड" को भारतीय संदर्भ में ढालने का काम मुगलों के दरबार के कलाकारों ने किया। यूरोपीय चित्रों में जहां वर्जिन मैरी और बाल यीशु को विशेष प्रकार से चित्रित किया जाता था, मुगलों ने इन चित्रों को भारतीय परिधान, पृष्ठभूमि और सजावट के साथ प्रस्तुत किया।
   - **परिधान और आभूषण:** वर्जिन मैरी और यीशु को भारतीय कपड़े पहनाए जाते थे जैसे कि साड़ी या पारंपरिक मुगली वस्त्र। यीशु को आमतौर पर लाल, पीले या हरे रंग के वस्त्रों में चित्रित किया जाता था जो भारतीय रंगों के अनुरूप होते।
   - **सजावट:** पृष्ठभूमि में फूलों, बाग-बगिचों और मुगली किले के आर्किटेक्चर का समावेश किया जाता था। चित्रों में सफेद हाथी, पक्षी या अन्य भारतीय जीव-जंतु भी देखे जाते थे।

iii). **धार्मिक और आध्यात्मिक उद्देश्य**
   - यह चित्रकला धार्मिक भावनाओं को व्यक्त करने के लिए होती थी लेकिन मुगल चित्रकला में इस प्रकार के चित्रों का उद्देश्य धार्मिक प्रचार नहीं था। इसकी बजाय यह कला धार्मिक सहिष्णुता और सांस्कृतिक आदान-प्रदान का प्रतीक बन गई।

- **मानवीय भावनाएँ:** मुगलों ने यीशु और मैरी के चित्रों में उनके मानवीय और आध्यात्मिक पहलुओं को उजागर किया। इस प्रकार इन चित्रों में करुणा, मातृत्व और संतोष की भावनाएँ प्रमुख थीं।
- **जटिल रंग योजनाएँ:** इन चित्रों में रंगों का चुनाव ध्यान से किया जाता था। यीशु और मैरी के चेहरे पर शांत भाव और संतुलन दर्शाया जाता था जबकि पृष्ठभूमि में चमकदार रंगों का उपयोग किया जाता था जो मुगली कला की समृद्धि को दर्शाते थे।

iv). प्रसिद्ध उदाहरण

- **जहांगीर और उनके दरबार के कलाकार:** जहांगीर के दरबार में, यूरोपीय कला की ओर आकर्षण अधिक था। इसके परिणामस्वरूप कई चित्रकला कृतियाँ बनीं जिनमें "मैडोना और चाइल्ड" का दृश्य दिखाई दिया। इन चित्रों में यीशु और मैरी को पारंपरिक मुगल शैली में चित्रित किया गया था।
- **अकबर और उसकी धार्मिक सहिष्णुता:** अकबर के समय में विशेष रूप से एलबम चित्रकला (जिसमें विभिन्न चित्रों का संग्रह होता है) में कई धार्मिक और सांस्कृतिक तत्वों को जोड़ा गया। इनमें "मैडोना और चाइल्ड" के चित्र भी शामिल थे जो मुगलों की धर्मनिरपेक्ष दृष्टि को दर्शाते थे।

v). कलात्मक शैलियाँ और तत्व:

- मुगल चित्रकला के प्रमुख तत्व जैसे गोलाकार कक्ष (circular panels), जटिल मिनिएचर पेंटिंग्स, प्राकृतिक दृश्य, फूलों की सजावट और रॉयल आभूषण इन चित्रों में दिखाई देते थे। ये सभी यूरोपीय और भारतीय चित्रकला का एक सुंदर मिश्रण थे।
- **मिनिएचर पेंटिंग्स:** मुगल कलाकारों ने "मैडोना और चाइल्ड" के चित्रों को बहुत सूक्ष्म रूप में तैयार किया। ये पेंटिंग्स न केवल धार्मिक महत्व रखती थीं बल्कि कला की सूक्ष्मता और पैटर्न को भी उजागर करती थीं।

vi). प्रसंग और पारंपरिक विमर्श

"मैडोना और चाइल्ड" के चित्रों का प्रयोग केवल धार्मिक प्रतीक के रूप में नहीं हुआ बल्कि इन्हें मुगल कला में मिश्रित धर्मों और संस्कृतियों के संवाद के रूप में भी देखा गया। ये चित्रकला के माध्यम से धर्मनिरपेक्षता और सहिष्णुता की भावना का एक प्रतीक बन गए।कुल मिलाकर मुगली चित्रकला में "मैडोना और चाइल्ड" का चित्रण एक दुर्लभ और अत्यंत दिलचस्प उदाहरण है जहां भारतीय और पश्चिमी धार्मिक, सांस्कृतिक और कलात्मक परंपराओं का मेल हुआ।

चित्रण की तकनीक और शैली

i). मुगल चित्रकारों ने यह अभारतीय कथाओं के चित्रण के लिए विशेष तकनीकें अपनाई। इनमें रंगों का सूक्ष्म उपयोग, परिप्रेक्ष्य (पर्सपेक्टिव) का परिचय और मानव भावनाओं का सजीव चित्रण शामिल है।

- **रंगों का चयन:** मुगल चित्र शैली के रंगों में एक विशेष प्रकार की दीप्ति थी। कलाकार ने मुगल चित्रों में प्रयुक्त रंगों को अपनी देखरेख में बनवाया। ये रंग तीन प्रकार के है-
- **वानस्पतिक रंग:** इसमें काला, महावर, काजल, नीला, पीला।
- **रासायनिक रंग:** सफेद, लाल सिंदूर, हिंगुल, पीला,
- **खनिज रंग:** लाल, हिरौंजी, गेरू, नीला, पीला चमकदार, हरताल, पीला गंदा, रामराज, हल्का पीला मटमैला, मुल्तानी मिट्टी, सफेद खड़िया हरा जंगाल, सगसब्ज (टैरावर्ट) सोना चांदी का प्रयोग किया गया

ii). वस्त्र और परिधान: पात्रों के वस्त्रों में फारसी, मध्य एशियाई और भारतीय परिधानो का अद्भुत संयोजन दिखता है।

iii). प्रकृति और पृष्ठभूमि: चित्रों में प्रकृति का चित्रण विस्तृत और जटिल था। पेड़, फूल, पक्षी और जलधाराएं चित्रों में जादूई सौंदर्य प्रदान करते हैं।

प्रमुख चित्रकार और संरक्षक-

मुगल काल में अनेक महान चित्रकार हुए जिन्होंने अभारतीय कथाओं को जीवंत बनाया। इनमें अब्दुस्समद, मीर सैयद अली, बिशन दास और मंसूर प्रमुख है, सम्राट अकबर, जहांगीर और शाहजहां कला के बड़े संरक्षक थे।

i). अब्दुस्समद और मीर सैयद अली: ये चित्रकार हुमायूं के साथ भारत आए। काबुल में मीर सैयद अली तथा अब्दुलस्समद सिराजी के निर्देशन में अनेक हिंदू मुसलमान चित्रकरों ने दस्तान-ए-अमीर हम्ज़ा के चित्रों का निर्माण प्रारंभ किया जो अकबर के समय पूरा हुआ। ईस पुस्तक में 1800 दृष्टांत चित्रों की रचना कर (मीर सैयद अली और अब्दुस्समद) अपने अथाह ज्ञान और अपरीमित साधना का परिचय दिया। अकबर ने मीर सैयद अली को हिंदू चित्रकारों के प्रति आकर्षित होने का आह्वान किया था। कहा जता है कि हिंदू चित्रकला (कश्मीर, गुजरात, जौनपुर, मान्डू की सूरत सीरत वाली चित्र परंपरा को अकबर ने मीर सैयद अली से ग्रहण करवाया। इस प्रकार उसकी फारसी शैली का रूप भारतीय चित्र शैली में मिलकर मौलिक मुगल शैली में निखर कर अकबर शैली के रूप में प्रकट हुआ।ख्वाजा अब्दुस्समद मीर सैयद अली के साथ मिलकर चित्रों की तैयारी करता था। उसकी मनोहरी चित्रकार के लिए उसे शीरी कलम की उपाधि प्रदान की गई।और उन्होंने फारसी और भारतीय परंपराओं को मिलकर नई शैली विकसित की।

ii). मंसूर: जहांगीर के दरबार में सक्रिय मंसूर प्रकृति और विदेशी कथाओं के चित्रण में प्रसिद्ध थे।

उपसंहार

यह शोध पत्र मुगल कला में अभारतीय कथा चित्रण के विषय पर केंद्रित है जिसमें विदेशी पृष्ठभूमि और कथाओं का चित्रात्मक विवरण किया गया है। मुगल कला में अभारतीय कथा चित्रण के योगदान को स्पष्ट किया गया है। भारत के सांस्कृतिक और कलात्मक इतिहास में मुगल कला में अभारतीय कथा चित्रण को प्रस्तुत किया गया है। चित्रकला में इस काल में भारतीय और फारसी परंपराओं का अनूठा संगम देखने को मिलता है ।

संदर्भ ग्रन्थ

1. डॉ. रीता प्रताप, भारतीय चित्रकला एवं मूर्ति कला का इतिहास राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी जयपुर चौदहवा संस्करण-2013 पृष्ठ संख्या.132, 133, 137, 143, 161.
2. डॉ. आर.ए. अग्रवाल, कला विलास-भारतीय चित्रकला का विवेचन, इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ. संस्करण-1995, पृष्ठ संख्या, 134, 139, 149.
3. डॉ. अविनाश बहादुर वर्मा, भारतीय चित्रकला का इतिहास, प्रकाश बुक डिपो, बरेली संस्करण-1995 पृष्ठ संख्या. 151, 169.
4. डॉ. लोकेश चंद्र शर्मा. भारत की चित्रकला का संक्षिप्त इतिहास, गोयल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ. संस्करण-1990 91, पृष्ठ संख्या. 97, 101, 112।